Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi CatD 2

(13. B. 30) Hindi Cat D 2

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Manmauj-caritra

Mun Meoj Charitter

मनमौजचरित्र

من موج چرتر

निम्बार्क मतानुयायि परम भक्त वैष्णव चतुरदास कृत

जिसमें

निज भक्त जन भरण पालक असुर कुल घालक ब्रज जनानन्द दाता चतुर्दश भुवन पाता वृषभानु सुता मुख कमल प्रकाशी सर्व सुख रासी श्री कृष्णचन्द्र आनन्द कन्द और राधिका महारानी की लीला आदि बहुत से माहात्म्य उत्तम दोहा चौपाई आदि में वर्णित हैं

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापा गया॥

अगस्त

सन् १८८० ई०

श्रीमते निम्बार्कायनमः॥

अथ मनमोजचरित्र

लिख्यते

॥दोहा॥ श्रीश्री श्री सत गुरु भजूं॥ दुतिये वंदूं सर्वसा-
ध॥तृतिये वंदूं सतनंदकूं॥दीजो बुद्धि अगाध॥१॥रूम
रूम ब्रह्मंडके॥राधा माधवईश॥ चतुरदासने पाइया॥
कृपा करी जगदीश॥२॥चतुरदास पावन भयो॥परसराम
परसाद॥नगर सलेमाबादके॥मेरे गुरु अनाद॥३॥
संप्रदाय मे युक्ति ये॥गादी बड़ी विशाल॥सुगराजन मा-
नतरहै॥श्री गुरु दीनदयाल॥४॥नगरसलेमादर्श
तें॥पापरहत नहिं पास॥ वहां श्रीपति सर्वेश्वर॥चतुर
जनोंका दास॥५॥ नग्र सलेमाबादकी ॥ महिमा
अगम अपार ॥ सुर नर मुनिजन रमरहैं ॥ वारजकूं
सिरधार॥६॥चतुर तजा सर्व मतकूं॥ पाया स्तस्व-
रूप॥ नवषटचतुर पुरानमैं ॥ राधा माधव भूप ॥७
नव दस चौदा सप्तमैं॥श्रीधर एक सुजान॥ इन पद
रजकूं परसके ॥ जारवें चढ़े विमान ॥८॥ रोम रोम
ब्रह्मांड मैं ॥ वासुदेव निज नाम॥ जोजन निश्वै र-
टतैहैं॥ तारि मुक्ति निजधाम॥ ९॥ श्रीगोपालवि

न दूसरा ॥ नाहिन तीनों लोक ॥ महा तत्व का तत्व है ॥
विरला पाया रोक ॥ १० ॥ आगम निगम पुरान ये ॥
कहै कृष्ण करतार ॥ अनंत कोटि ब्रह्मांड का ॥ च-
तुरा सिरजनहार ॥ ११ ॥ तारा गण तेतीस सुन ॥
रवि शशि इंद्र महेश ॥ ये तो पार न पाइया ॥ रटत
भौमि धर शेष ॥ १२ ॥ चतुर दास या जगत में ॥ भ-
ला न दीखै कोय ॥ तातैं भज सत नंद कूं ॥ होनी हो-
य सो होय ॥ १३ ॥ राधा सर्वेश्वर हरि ॥ सिर भूपन
के भूप ॥ चतुर दास निम्बार्क ॥ श्री गुरु सत्त स्वरूप ॥
॥ १४ ॥ चेत चतुर भज कृष्ण कूं ॥ जनम वदित्या जा-
त ॥ मात पिता परिवार ये ॥ नाहिन तेरं साथ ॥ १५ ॥
चतुर दास अम्मर चली ॥ जैसे नदिया पूर ॥ रोकी हू
रुकती नहीं ॥ जांय मिलैगी धूर ॥ १६ ॥ चतुर दा-
स गई वक्त ये ॥ बहुरि न पावै मिंत ॥ अबहुं चेत वि-
गड्यौ नहीं ॥ तजो सर्व मन चिंत ॥ १७ ॥ चतुर बड़ा
अचरज सुनो ॥ मांम महल के बीच ॥ हरि आगी जा-
मै धरी ॥ ताहुन पिगले मीच ॥ १८ ॥ चतुर चीज ये
धूर की ॥ धूरहि मैं मिल जात ॥ जतन किये उबरै
नहीं ॥ क्यों मूरख पछतात ॥ १९ ॥ ना स्वरूप ना
शस्त्र ॥ नाहिन दीखै घाव ॥ हंस मार आगे करे ॥
कोइ न बचावै दाव ॥ २० ॥ काल पवन चक्की फिरे ॥

सवहूं हारे पीस ॥ चतुर भजो गोविंद कूं ॥ उवरया विस-
वा वीस ॥२१॥ चतुर दास अमर चली ॥ जैसे मानूं रेल
॥ वरष वरष इष्टेशन ॥ मास मास प्रति मेल ॥२२॥
पवन वेगतें जात है ॥ समझे नहीं अज्ञान ॥ काल ग्र-
सैया वीच मैं ॥ कौन भजे भगवान ॥२३॥ पाव पल-
क मैं जायगा ॥ नजर आट ये रेल ॥ श्यामा श्याम म-
नायके ॥ कर सत गुरकी सैल ॥२४॥ काया का अंज-
न सुनौं ॥ जठरा जलै मंझार ॥ स्वासा काप दुया अति
॥ कौंना भजे गंवार ॥२५॥ तार खबर वीतदु मिले ॥
दूत पिंगला प्रमान ॥ नजीक पहुंचे कालसी ॥ कौंन
भजै भगवान ॥२६॥ एक सड़क सुर पुर गई ॥ दु-
तिया जम अस्थान ॥ जैसा तैसा टिकट लै ॥ टेसन
ज्ञान पिछान ॥२७॥ वा हेशनके वीच मैं ॥ हाकिम पै-
सा लेत ॥ या हेशनके वीच मैं ॥ सत गुर हेला देत ॥२८
पुलावराग़ी पर सिद्धु ये ॥ तापे जाती रेल ॥ चतुर चढ़ो पु-
ल भक्तिको ॥ वोरी करेगा सैल ॥२९॥ कग मगार कं-
दीलकी ॥ दोद नैनन सुज्ञान ॥ अजव ख्याल हरि
रच दिया ॥ करूं लग कहूं वखान ॥३०॥ सव फंदनके
वीच है ॥ सव फंदन से दूर ॥ चतुर दास ताकूं रटै ॥ पूर्णा
नंद हजूर ॥३१॥ अष्ट पहर चौसठ घड़ी ॥ सुमरौ दीन द-
याल ॥ ये तन कछू न कामका ॥ भजो लाड़ली लाल ॥

॥३२॥ हे स्वासा सुनवावरी ॥ भजियो दीनानाथ ॥ दीसतहै संसारका ॥ चलै न एको साथ ॥ ३३ ॥ है जिव्हा सुनपापिनी ॥ रटत नाहिं दिनरैन ॥ खटरसकूं चाचे घणी ॥ तातें नाहिंन चैन ॥ ३४ ॥ हे बत्तीसी सूरमा ॥ रसन लगावो गैल ॥ नातर काटनिकासिये ॥ मेटमकलयेफैल ॥ ३५ ॥ वे चक्षू चातुर गुणी ॥ निरखो श्याम स्वरूप ॥ कामक्रोधमदलोभये ॥ तजो मोहका कूप ॥ ३६ ॥ श्रवनसुनो तुमवावरी । कीर्तन कथा रसाल ॥ बुरी बुराई त्यागके ॥ भजियो गिरधरलाल ॥ ३७ ॥ हे मस्तक प्रिय तूवड़ा ॥ झुकेरहो हरिपांय ॥ जम जालिमसे नाहडरो ॥ श्यामा श्याम मनाय ॥ ३८ ॥ हे कंठ अभागी अंध सुन ॥ कंठी विन जिनरेव ॥ कंठी विनभोजन तजो ॥ कंठी कंठहि सेव ॥ ३९ ॥ हे लिलाट लंबा सुभग ॥ विन स्वरूपका सल्ल ॥ वा लिलाट को फोड़िये ॥ धर्मरायजी भल्ल ॥ ४० ॥ हे भुज सुंदर सुहावना ॥ शंखचक्र निज अंक ॥ ऐसे नंद कूं पायके ॥ जमसेर हो निशंक ॥ ४१ ॥ हे पंजा परिब्रह्मका ॥ जपजपजप निजनाम ॥ आपने करसे दानदे ॥ प्रसन्न होयघनश्याम ॥ ४२ ॥ पग पवित्र तीरथ करो ॥ वृंदावन ध्रुवलोक ॥ चोसठ तीरथ परसके ॥ पारस होत अशोक ॥ ॥ ४३ ॥ अनेक बात कायह सुनों ॥ ये देह चर्मस्व-

रूप॥कामन आवे काहुके॥भज वृंदावन भूप॥४४॥
मनुष्य देहकूं पायके॥ वृथा न खोवो मित॥ आगे
को सुख होयगो॥ भज गोविंद निचिंत॥४५॥ मे-
रौ मेरौ करत हौ॥ जोधा गये अनंत॥ जिन गाया
गोबिन्दकूं॥ सोइ पाया है अंत॥४६॥ बरखा ऋतु
सागर भर्‌यौ ग्रीषम पावत नाश॥ ऐसे तन ये जा-
यगी॥ गोविंदके गुन भास॥४७॥ हे मति मंद गो-
विंदकूं॥ भजहु दिवस अरु रात॥ अंत काल यहि
रक्षही॥ यही मात अरु तात॥४८॥ बाला पन खे
लत रह्यौ॥ तरुण भयौ मदांध॥ वृद्ध बितायौ सोच
मैं॥ कर कर घरको धंध॥४९॥ हे मन या अख्यानकूं
॥कहूं लग करूं बखान॥ निश्चय भज गोविंद
कूं॥ यह पूरण भगवान॥५०॥ हे मन पिउ पिउ जप
तप पैया॥ अपनो अर्थ पिछान॥ ऐसे मन जपते
रहो॥ पूरन श्रीभगवान॥५१॥ राधा माधवकूं जपो
॥ सर्वलोक विख्यात॥ चतुरदास मति ना तजो॥ अ-
मर बीती जाय॥५२॥ आठ पहर चौसठ घड़ी॥ भूल
न कबहु बिसार॥ राधा सखे अरु भजो॥ ब्रह्म रूप कर
तार॥५३॥ राधावरके नामसे॥ चतुर फिरै निशं
क॥ निम्बार्क गुरु देवकूं॥ पूजे राजा रंक॥५४॥ कृ-
ष्ण हमारा इष्ट है॥ कृष्ण उपासी संत॥ सो गुरु मेरे

जानियो ॥ वोही हमारे महंत ॥ ५५ ॥ कृष्ण विना
नहिं मानता ॥ अन्य देव की सीख ॥ कृष्ण हमारा ई-
श्वर ॥ रहूं कृष्ण की रीख ॥ ५६ ॥ गुरु संतमावाद के
॥ कृष्ण बताया मोय ॥ सो मैं निश्चय कर लिया ॥ हो-
नी होय सो होय ॥ ५७ ॥ कृष्ण हि सिर जन हार हैं ॥
कृष्ण सकल के पार ॥ कृष्ण हमारा प्राण है ॥ कृष्ण
आप करतार ॥ ५८ ॥ कृष्ण हि भार उतारियो ॥ जन-
की करी सहाय ॥ मोक्ष मुक्ति दे कृष्ण जी ॥ सो निज लो
क सिधाय ॥ ५९ ॥ सबसे न्यारा कृष्ण है ॥ रह्यो जगत
मैं छाय ॥ कृष्ण कृष्ण रटता रहे ॥ वो नर नरक न जाय
॥ ६० ॥ ज्ञान हमारे कृष्ण का ॥ ध्यान हमारा कृष्ण ॥
॥ श्री कृष्ण का दास हूं ॥ सुनौं संत ये प्रश्न ॥ ६१ ॥ श्री
कृष्ण के नाम बिन ॥ प्रंथन मानूं एक ॥ हरि व्यासिन
का दास हौं ॥ धरी कृष्ण की टेक ॥ ६२ ॥ जैसा हूं तैसा
हूं री ॥ तेरा हूं ब्रजराज ॥ मैं मति मंद गवांर हूं ॥ मेरी
राखौ लाज ॥ ६३ ॥ कृष्ण नाम रटता रहूं ॥ दिलसे
करूं न दूर ॥ चतुर दास तो जा मिल्या ॥ जूं नदिया मैं
पूर ॥ ६४ ॥ सिकलीगर तलवार का ॥ देत मोरचा खो-
य ॥ चतुर दास का खो दिया ॥ कृष्ण हि दीप संजोय ६५
धन वृंदावन मधुपुरी ॥ धन यमुना का नीर ॥ धन गो-
पी धन ग्वाल गउ ॥ धन वनसी वट तीर ॥ ६६ ॥ धन गि

वरकरपैधस्यो ॥ व्रजरक्षणाकेकाज ॥ धनवोयशोदानं-
दजी ॥ सुतश्रीकृष्णमहाराज ॥ ६७ ॥ यावोकिन केपुत्र
थे ॥ वेसर्वोंकेवाप ॥ भक्तनहितलीलारची ॥ जिनकाधरि-
योजाप ॥ ६८ ॥ वनउपवनसोंधन्यहै शीतलमंदसुगंध ॥
संपूरणव्रजगोपिका ॥ तिनसंगकियोआनंद ॥ ६९ ॥ नंदगा-
मसोधन्यहै ॥ धनवरसानादेश ॥ श्यामाश्यामरहैतहां ॥
सुन्दरवारीवेश ॥ ७० ॥ धनचौरासीकोसहै जंह हरि कियो
आनंद ॥ लतापतागिरिकूपमें ॥ दरसदेतगोविन्द ॥ ७१ ॥
धन्यधन्य वाभूमिका जहां हरि कियो विहार ॥ जोवारजकूं
सिरधरै ॥ सोहि जगतकेपार ॥ ७२ ॥ वृंदावनमहिमाघनी
॥ रचनाअगमअगाध ॥ सुरनरमुनिजनरमरहै ॥ वसेंवि
प्रअरुसाध ॥ ७३ ॥ आगमनिगमसुखव्यासये ॥ शंकर
कियोवखान ॥ शेषशारदारटतहैं ॥ वृंदावनभगवान ॥
७४ ॥ सनकादीब्रह्मादीमुनि ॥ इंद्रादिकतेतीस ॥ वृंदावन
गोलोककी ॥ कथाकहीजगदीश ॥ ७५ ॥ प्रियापीतमअंव-
मारकी ॥ महिमाअगमअपार ॥ सुरनरमुनिपावेनहीं ॥
ढूंढ़ढूंढ़ गयेहार ॥ ७६ ॥ द्विजवैष्णवअरुवैश्यपुनि ॥ रवि
शशिदोनोंवंश ॥ कृष्णनामरटतेरहै ॥ जोदवनकाअंश
॥ ७७ ॥ कृष्णजपेनिजप्रेमसें ॥ रामानुजमुनिसाध ॥
चतुरदासनेपाइया ॥ आदिअनादीनाद ॥ ७८ ॥ चतुराक्षर
क्या ढूंढ़के ॥ निम्बारकनिजधाम ॥ राधावरघनशाम

का॥ माधवलीनेनाम॥७६॥काज सुधारा जगतका॥विष्णुशाम महाराज॥भक्तन हितदर्शनदिया॥वालरूपब्रजराज॥८०॥परसराम गुरु धन्यहै॥श्रीहरी वासीसंत॥राधावर घनश्याम को॥गावें संतमहंत॥८१॥श्वास श्वासभजकृष्णाकूं॥वृथा श्वास जिनखोय॥सुन मन मूरखवावरा॥होनीहोय सोहोय॥८२॥श्रीकृष्णामहाराजकूं॥भजरे मनवामित॥राधावरकेशरनमें॥लेटेरहो निचिंत॥८३॥धनसगानये मनसगा॥सगाहमारा कृष्णा॥मनतू सुन लेवावरा॥तोकूं होइये दर्षा॥८४॥श्रीकृष्णाकरतारहै॥आदिअंतको मूर॥तातेंहरि कूं छांड़के॥कोनसमेटैधूर८५कमर रेख कृष्णाहि लिखी॥कोहेमेटनहार॥लिखनाथा सो लिखदिया॥क्यों ना भजेगंवार॥८६॥सुखदुखया संसारका॥लिखिया कृष्णा विचार॥सुन मन मूरख वावरे॥करनहार करतार॥८७॥और देव मुरूको कहें॥मानूं नहीं लगार॥कृष्णा नामरटतारहूं॥चतुर वेदका सार॥८८॥परनारी नहिं भोगऊं॥अन्य देव मम रूठ॥होनी होय सो होइया॥प्रियापीतमरसलूट ८९॥नरनारी शिभुकारने॥देवपीरअस्थान॥प्रार्थनाकरता फिरे॥जिमटुकरनफिरै श्वान॥९०॥हरिव्यासिन परतापसे॥पाया पूरा ज्ञान॥गुरुसामर्थ्य ऐसे करी॥राधाश्याम सुज्ञान॥९१॥निम्बारक गुरु मानये॥येउपासनाधार॥वंभिन कोनहिं मानियो॥भजियो सि-

रजनहार ॥ ९२॥ शिवशारद गण पति रटैं ॥ चतुरानन अहि शेष ॥ सनकादिक ब्रह्मादि मुनि ॥ इंद्रादिक वसु वेष ॥ ९३ अवधपुरी मधुपुरी वसो ॥ गावो सियावर जोय ॥ अवधु मानो आमने ॥ होनी होय सो होय ॥ ९४ ॥ इन चरनन की धूरसे ॥ तरी अहल्या नार ॥ वो मेरे सिरपे पड़ो ॥ चतुरा करे पुकार ॥ ९५ ॥ सोरठा ॥ श्रीराम सुत घनशाम ॥ चतुरदासचिंता तजो ॥ जपो कृष्ण का नाम ॥ काम सुधारो केशवा ॥ ९६ ॥ श्रीकृष्ण करतार ॥ भती सारे जगत का ॥ जगत किये विस्तार ॥ कार लगाई सिंधु की ॥ ९७ ॥ कृष्ण जपो जन मिंत ॥ विष्णु विहारी सुगड़ तुम ॥ कर कर मन से चिंत ॥ सहाय करे सीता पती ॥ ९८ ॥ श्री कृष्ण महाराज ॥ लाज राखियो भक्त की ॥ तुमहि सुधारन काज ॥ आय मिले तुम तीन कूं ॥ ९९ ॥ विहारी वैष्णव दास ॥ खास तिहारा दास जो ॥ यहि चातुर के आस ॥ मौज करे रत्ला पुरी ॥ १०० ॥ कुंडलिया ॥ नंदनंदन सुमरो नहीं ॥ पूजत कलि में भूत ॥ अंत फजीते होयगो ॥ जूगनि का को पूत ॥ जूगनि का को पूत बाप को किसे बतावे ॥ आगे को दुख होय जभी वो जमपुर जावे ॥ कहै चतुरदास भज कृष्ण कूं ॥ होय न आगे दुःख ॥ मोक्ष मुक्ति कूं पायके ॥ आगे पावे सुख ॥ १ ॥ कृष्ण नाम कूं गावरे ॥ करकर मन में चिंत ॥ दंभी दुष्ट को त्यागियो ॥ सुनो श्याम रत मिन्त सुनो श्याम रत मिंत ॥ कलि में केहि

पाखंडी ॥ साधूको धरसुवांग ॥ बड़े वेदंगियाफंडी ॥ कहै
चतुरदासकरजोर ॥ भूलधोकोजिनखावो ॥ आदिसना-
तनधर्म ॥ भूलतुमजिनविसराओ ॥ २ ॥ आदिब्रह्म श्रीकृ-
ष्णहैं ॥ शक्तिराधिकामान ॥ दोई स्वरूपसतयेकहै ॥ कहां
लगकहूंवखान ॥ कहं लगकहूं वखान ॥ चढ़ोवैकुंठ मंझा-
रा ॥ आवागवनमिटिये ॥ खुलेगा मोक्ष द्वारा ॥ कहै चतु
रदासकरजोर ॥ भजो घनश्यामकूं मोहमायाकूं जीत ॥
चढ़ोनिजधामकूं ॥ ३ ॥ कृष्णनामरटतेरहो ॥ दूजो नांय
उपाय ॥ आदिकितेहीतरगया ॥ राधानाथमनाय ॥ रा-
धानाथमनाय ॥ पापकूं अग्निजलाओ ॥ वनोहरिकेदा-
स ॥ धासपीछे नहिं आओ ॥ कहैचतुरदासमानतरहो ॥
सुमरो सिरजनहार ॥ दंभिनको मत मानियो ॥ गावोब्र-
ह्मपुरा ॥ ॥ ४ ॥ द्वादश शतसीकंदहैं ॥ श्रीकृष्णकीय-
न ॥ द्विजवैष्णव वांचे सुने मुरजादाके वेन ॥ मुरजादाके
वेनश्याम जससुनियोमिंता ॥ वांचेसुने सुजान ॥ जिनो
कीगई है चिंता ॥ कहैं चतुरदासकरजोड़के ॥ सुनियो सं-
तसुजान ॥ श्रीभागवत भुकनेकही ॥ सो अम्मृतकी
खान ॥ ५ ॥ प्रतिमापूरन ब्रह्मकी ॥ साक्षातपहिचान
॥ विषकूं मीरापीगई ॥ चरणामृतुकोजान ॥ चरणामृतुकोजान
रूपमें रूपमिलायो ॥ यहप्रतिमा परमान ॥ भक्तमाला
में गायो ॥ कहै चतुरदाससज्जनसुनो ॥ साखीभरी गोपाल

॥ वृद्ध विप्रकूं जानके ॥ गयेउड़ीसे लाल ॥ ६ ॥ प्रतिमाकूं
पत्थर कहै ॥ सोही हरामी जान ॥ जिनके मुखकारे भये ॥
धर्मराय अस्थान ॥ धर्मराय अस्थान ॥ कहूं मे जिनकी
लीला ॥ अष्टावीस जो नरक ॥ तहां परखूव हि पीला ॥
कहै चतुरदास पुकार ॥ भजो घनश्यामकूं ॥ श्यामाश्या-
म मनाय ॥ चढ़ो निज धामकूं ॥ ७ ॥ हरि मंदिरकूं जाय ॥ हरी
को सीस नवावै ॥ चरणामृत परसाद ॥ प्रीति सैं नित उठ
पावै ॥ प्रीत से नितउठ पावै ॥ सो वैकुंठ जाय ॥ आवागम-
न मिटायके ॥ रहै मुक्तिको पाय ॥ कहै चतुरदास सोहि
धंन्य है ॥ गावै कृष्णमुरार ॥ परमारथ करते रहो ॥ आय मि-
ले करतार ॥ ८ ॥ प्रतिमाने पड़ चादिया ॥ सुनो मित्र सुख
पाय ॥ प्रतिमा राधाकंत की ॥ महिमा कहीन जाय ॥ महि-
मा कही न जाय ॥ प्रगट डाकोर वखानौं ॥ तुलसी नरसी भ-
क्त ॥ कंचनी मुगट पिछानौ ॥ कहै चतुरदास कर जोर ॥
विप्रने खूब जिमाई ॥ सजना नामा की प्रीत ॥ जगत मेंजा-
हिर भाई ॥ ९ ॥ प्रतिमाने पड़वादिया ॥ कहं लग कहूं बनाय
॥ प्रतिमाकूं मानै नहीं ॥ सोहि हरामी राय ॥ सोहि हरामी
राय ॥ नरकका वो अधिकारी ॥ प्रतिमा तजे सो मूढ़ ॥
ताहि मुख भयो खारी ॥ कहै चतुरदास गुरू ज्ञानसे ॥
तोहे समझावे अंध ॥ दंभिन मुखका जल धर्यौ ॥ छोड़ो
कलिके फंद ॥ १० ॥ कृष्णानाम की लूट है ॥ लूट सके तो लूट

॥नहिंआगेपछतायगो॥धरीपापकीमूढ॥धरीपापकी
मूढ॥जमारोगेवतखोयो॥आगूमालुमहोय॥अभी
तूसुखभरसोयो॥कहेचतुरदाससमझाय॥कृष्णाकूं
मानरे॥पारब्रह्मकरतार॥सत्ययेजानरे॥११॥हेम-
नमूरखबावरा॥समझायोकेइवार॥समझायोसम
झे नहीं॥खावेकूंहुसियार॥खावेकूंहुसियार॥भज-
नबिन जन्मगवांयो॥भगवतसेनहिंनेह॥रोवतो
जमपुरधायो॥कहेचतुरदासकरजोड़के॥भजकृ-
ष्णासुजान॥यहअवसरपावेनहीं॥आगेपड़ेपिछा-
न॥१२॥घरबिनबागबजारमें॥सुमरोआदिमुरा-
र॥मातपितासेहुकमले॥मनभक्तीविस्तार॥मन
भक्तीविस्तार॥श्रीवृंदावनजावो॥पारब्रह्मपहिचा-
न॥चरणामेंसीसनवावो॥कहेचतुरदासकरजोर॥
भजनटकसालहे॥जोंहृपरखेदाम॥सत्यघनश्या-
महे॥१३॥अष्टादशनवषट्चतुर॥औरोंग्रंथकरो-
ड़॥यहीवचनमानतरहो॥दुष्टनकूंदोछोड़॥दुष्ट-
नकूंदोछोड़॥परमसुखहोहिहेआगे॥निम्बार्कपद
पूज॥रेमनपरमअभागे॥कहेचतुरदासपुकार॥ज-
न्मयोजातहे॥भजवृंदावनचंद॥बहुरिनहिंआतहे
॥१४॥ब्रह्माशेषमहेश॥रटतहरिनामकूं॥रविशशि
इंद्रगणेश॥चहेनिजधामकूं॥चहेनिजधामकूं॥

अमर होइ हरि गुण गावै ॥ नारद शारद वरुण ॥ ध्यान कुवेर लगावे ॥ कहे चतुर दास कर जोर ॥ भजो घन श्याम कूं ॥ तेतीस कोटि मिल देव ॥ जपे निज नाम कूं ॥ ॥१५॥ हनुमत नारद गरुड़ जी ॥ सनकादिक इंद्रादि ॥ कश्यप अदिती गंधर्व ॥ ब्रह्मादिक अनादि ॥ ॥ ब्रह्मादिक अनादि ॥ कृष्ण के गुन कू गावैं ॥ तारागण अरु मेघ ॥ यक्ष किन्नर हि मनावें ॥ कहे चतुर दास कर जोड़ ॥ भजे जम श्याम कूं ॥ नव ग्रह चौकी देत ॥ भक्ति की धाम कूं ॥१६॥ वाल्मीक शुक व्यास मुनि गोतम गुन गावें ॥ विश्वामित्र वसिष्ट ॥ वामहरि देव मनावें ॥ वामहरि देव मनावें ॥ ताहि को भृगु जस गावें ॥ भारद्वाज कात्यायन ॥ कृष्ण कूं सींगी धावैं ॥ कहे चतुर दास घनश्याम ॥ लोमस धरत ध्यान ॥ कलयुग कोई पासन इमें ॥ क्या जाने वेद मान ॥१७॥ दुर्वासा प्रहलाद ॥ भजे रामानुज नामी ॥ माधव विष्णु श्याम ॥ गुरु निम्बार्क स्वामी ॥ गुरु निम्बारक स्वामी ॥ कृष्ण का ध्यान लगावैं ॥ अंवरीष हरि चंद ॥ सत मो होर धज धावैं ॥ कहे चतुर दास कर जोड़ ॥ भजो सत नंद कूं ॥ तर गये तारवो भक्त ॥ छांड़ सब फंद कूं ॥१८॥ कलि अथग गंभीर में ॥ कृष्ण स्वरूपी नाव ॥ सुगरा सुगरा तिर गये ॥ नुगरा डूबे जाय ॥ नुगरा डूबे जाय ॥ श्याम सुपने नहिं जानें ॥

॥ श्री कृष्णा कूं त्याग ॥ डंभ पारवंडी मानैं ॥ कहे चतुरदा-
स गुन गाय ॥ समरु मन मूरख धोंदू ॥ अवसर वीत्यो
जाय ॥ भजन कर मूरख भोंदू ॥ १९ ॥ या जग देखत
जातहै ॥ राजा रंक फ़कीर ॥ भाइ बंद सज्जन सगा ॥
रहेन एकौ तीर ॥ रहेन एकौ तीर ॥ काल सबही को खा-
वे ॥ जो गावे गोविंद ॥ बहुरि पाछे नहिं आवे ॥ चतुर दा-
स सो द धन्य है ॥ गुन गावे गोपाल ॥ विप्र साध पूजत
रहे ॥ ताहि न परसे काल ॥ २० ॥ क्षीर सिंधु श्रीनाथजी
शेषनाग की सेज ॥ चरण हलासै लक्ष्मी ॥ कोट भव-
न सो तेज ॥ कोट भवन सो तेज ॥ व्यास जिन वेद प्रकासै ॥ ना-
भि कमल के बीच ॥ चतुर मुख वेद हुलासै ॥ कहे चतुरदास कर
जोड़ ॥ मेरो यह ईश है ॥ भृकटी से त्रिपुरार ॥ हरी जगदीश
हैं ॥ २१ ॥ धन्य धन्य गुरुदेव ॥ धन्य वो जगर सलमा ॥
धन्य श्री गोपाल ॥ धन्य वो भक्ति परेमा ॥ धन्य वो
भक्ति परेमा ॥ दास हरि व्यासिन पाई ॥ आवागव-
न मिटाय ॥ चतुर के आनद सांई ॥ कहे चतुरदास
धनराम ॥ गंग है मात हमारी ॥ भ्रात एक धनश्या-
म ॥ भक्ति गायन विस्तारी ॥ २२ ॥ दोहा ॥ राधा सर्वेश्वर
हरी ॥ पारब्रह्म करतार ॥ चतुरदास चिंता तजो ॥ सुमरो स-
त्य मुरार ॥ १ ॥ [illegible]पुरी आनंदमय ॥ इंद्र श्री [illegible] जीत ॥
चतुरदास जेहि पोरपे ॥ गावे परम पुनीत ॥ २ ॥ बासा हव श्री

सीसोदरारी ॥ मंदिर कियो तयार ॥ सोहरि सज्जन मम धाम है ॥ जांहरि जप्यो मुरार ॥ ३ ॥ सप्त पहर दिन दोय मैं ॥ ग्रंथ कियो विस्तार ॥ भूल चूक कछु होय तौ ॥ लीजो संत सुधार ॥ ४ ॥ पिंगल मत जाणूं नहीं ॥ पढ्यो न वेद पुरान ॥ मैं म्हारी मत सारं ॥ कीनो ग्रंथ वखान ॥ ५ ॥ संमत पुराना जाणिये ॥ सौ ऊपर पैंतीस ॥ जेठ मास वदि दूज कूं ॥ पूरण किया वीस ॥ ६ ॥ जो कोई ये वाचे सुने ॥ जो जन भक्त कहाय ॥ चतुरदास निश्वै रटै ॥ सो वैकुंठै जाय ॥ ७ ॥ मन के हारे हार है ॥ मन हूं से परतीत ॥ चतुरदास मन ही कहा ॥ मन के जीते जीत ॥ ८ ॥ इति श्री जंबू द्वीपे भरत खंडे अवंती समेरत्नपुरी मध्ये वैष्णव हरि व्यासी चतुरदास विरचिते निम्बार्क परताप मनमोज चरित्र सम्पूर्णाम् ॥ श्रीरस्तु कल्याण मस्तु । शुभं भवतु ॥ श्री राधा नाथार्पण ॥

इति

I